SEMESTER - 2

CC- 8

Society and economy in Indian History

- **Unit – 4 : Industrial Development**

  Medival India

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 8604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

मुग़ल काल में उद्योगों का विकास व पतन

मुगलकालीन भारत में उद्योगों को विकास व पतन से पूर्व हमारे लिए यह जानना अति आवश्यक है कि तत्कालीन बादशाहो के समय विज्ञान व तकनीकी का विकास किस स्तर का था, क्योकि यही उद्योगों की आधारशिला तैयार करती है! मुग़ल काल में बादशाहो ने विज्ञान एवं तकनीकी के प्रति चयनात्मक रुख अपनाया जो अपनी सुविधा, आवश्यकता एवं वस्तु की उपलब्धता पर निर्भर था! मुगलो के द्वारा संरक्षण दिए जाने वाले विषयो में मुख्यतः चिकित्सा विज्ञान, अस्त्र-शस्त्र निर्माण, ज्योतिष, जहाज निर्माण, भवन निर्माण आदि प्रमुख थे! ज्योतिष ज्ञान का प्रयोग समय की गणना और मौसम की चक्रीय दशाओ को जानने में किया जाता था! बादशाह हुमायुँ ने ज्योतिष शास्त्र में विशेष रूचि ली! अकबर ने बीजापुर से एक वैज्ञानिक मीर फ़तेह उल्लाह सिराजी को बुलाया और एक कैलेंडर का निर्माण कराया! सिराजी के सन्दर्भ में अकबर का विचार था कि राज्य कि सारी संपत्ति के बदले इस व्यक्ति की महत्ता अधिक है! अकबर ने स्वयं ऐसी यांत्रिकी विकसित की, जिसके माध्यम से एक साथ १६ बंदूकों कि नाल साफ़ की जा सकती थी और एक ही साथ कई बंदूकों को दागा जा सकता था! इसी तरह एक बैलगाड़ी का विकास किया गया जो अनाज पीसने में सहायक थी!

अकबर ने बंदूक निर्माण तकनीक में यूरोपियन पद्धति को शामिल किया तो साथ ही जहाज से पानी निकलने के लिए चेन पंप तकनीक अपनाई जिसका प्रयोग यूरोपीय करती थे! इसी तरह मुगलो ने वस्त्र-निर्माण में इतालवी रेशम सूत्रम पद्धति को अपनाया, जिससे सूत उत्पादन में वृद्धि हुई! प्राकृतिक रंगो से निर्मित वस्त्र निर्माण की उन्नत तकनीक अपनाई गई, जिसके अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अत्यधिक मांग थी! नील की खेती के माध्यम से नीले रंग की प्राप्ति कर सहायक रंगो का निर्माण भी किया गया! मुग़ल काल में सिचाई जल के लिए गहरे स्तर से पानी निकलने हेतु लीवर-प्रणाली का विकास हुआ! मुग़ल काल में प्रौघोगिकी का विकास तोपखाने बारूद निर्माण के लिए उद्योगों_के रूप में हुआ! जहाज निर्माण के सन्दर्भ में मुग़ल यूरोपीयों की आधुनिक तकनीक को पूर्णतः प्राप्त नहीं कर सके, जिसके कारण वे विशालकाय जहाजों का कारखाना बनाने में असफल रहे! इसी तरह खड़ी लौह भट्ठियों के अभाव में वे बड़ी और मजबूत तोपों का निर्माण नहीं कर सके!

मुग़ल काल में उन्नत प्रौघोगिकी का विकास न होने का प्रमुख कारण यह था कि शाही कारखाने मौजूद थे जो श्रम कि प्रधानता पर बल देते थे और जातीय व्यवस्था लगातार सस्ता श्रम उपलब्ध कराने में सहायक रही! इसलिए श्रम तथा समय बचाने वाली तकनीक तथा यंत्रो की ज़रूरत ही नहीं पड़ी! साथ ही मुग़ल अभिजात्य कुलीन वर्ग द्वारा शिल्पकारो को संरक्षण दिया गया! फलतः मानव निर्मित हस्तशिल्प उत्पादों की लोकप्रियता बनी रही! इस काल में कुछ प्रमुख फसल उत्पादन केंद्र विकसित हुए, जिन्होंने शिल्पो के विकास को प्रोत्साहित किया! जैसे बयाना में नील की खेती अत्यधिक होती थी! अतः रंगाई उद्योग को बढ़ावा मिला! सर्वप्रमुख वस्त्र उद्योग के अंतर्गत सूती ऊनी और रेशमी वस्त्रो का उत्पादन होता था! सूती वस्त्र उत्पादन के केंद्र पटना,बनारस,जौनपुर आदि थे, तो ढाका, शिल्प (रेशम) के लिए प्रसिद्ध था! आगरा, लाहौर कालीन निर्माण के लिए प्रसिद्ध था! तो कश्मीर में शॉल का निर्माण लिया जाता था! इसके अतिरिक्त शोरा(बारूद) उत्पादन के लिए विहार एवं प्रायद्वीपीय भारत प्रमुख केंद्र था और इसका उपयोग बारूद निर्माण में किया जाता था! वही मुग़ल काल में धातु उद्योग भी विकसित अवस्था में था! लौह उद्योग के माध्यम से अस्त्र-शस्त्र एवं उन्नत किस्म की तलवारो का निर्माण किया जाता था तो साथ ही आभूषण बर्तन भी बनाए जाते थे! इसके अतिरिक्त बहुमूल्य पत्थरो से निर्मित मालाए एवं वस्तुएँ तथा हाथी दाँत बने निर्मित वस्तुएँ भी उल्लेखनीय थी! इन वस्तुओ के आयत - निर्यात की समुचित व्यवस्था शास्त्रों ने कर रखा था, जिसके कारण मुग़ल काल में आंतरिक और विदेशी व्यापर पर्याप्त विकसित था और इसक निम्न कारन थे -

- केंद्रीय साम्राज्य (शासन) की उपस्थिति
- आसगमन की सुविधा अर्थात स्थल एवं जल परिवहन की सुविधा मौजूद थी
- व्यापारिक मार्गो की सुरक्षा
- यूरोपियो का आगमन
- मौद्रिक अर्थव्यवस्था की उपस्थिति
- बैंकिंग व्यवस्था एवं हुंडी प्रणाली की मौजूदगी

आंतरिक व्यापार मुख्यतः स्थल से होता था! बंगाल,चीनी, एवं चावल का निर्यात करता था, जो भारत के विविध क्षेत्रो में भी पहुंचाया जाता था! इसी तरह मालवा से पान प्राप्त किया जाता था! वस्तुतः आंतरिक व्यापार में खाघान्न एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएँ प्रमुख थी! वही विदेश व्यापार के तहत वस्त्र,मसाले,अफीम,रेशम निर्यात की प्रमुख सामग्री थी, जबकि घोड़े, मदिरा,बहुमूल्य पत्थर आयात के प्रमुख सामग्री थी! यहाँ महत्वपुर्ण बात यह है कि योरोपियन व्यापारी भारतीय वस्तुओ के बदले सोने एवं चाँदी जैसे बहुमूल्य वस्तुएँ देते थे! इस सन्दर्भ में यात्री बर्नियर ने कहा कि चाँदी तो भारत में सिर्फ आती ही है, यहाँ से जाती नहीं है! भारत में चाँदी आने के अनेक रास्ते थे किन्तु जाने के रास्ते नहीं थे! इस दृष्टि से व्यापारिक संतुलन भारत के पक्ष में था! और इस दृष्टि से यह ज्ञात होता है कि जहाज निर्माण उद्योग और मुद्रा अर्थव्यवस्था उन्नत अवस्था में था! युरोपियन देशो में पुर्तगाल ने सर्वप्रथम भारत के साथ व्यापार के लिए सीधा सामुद्रिक मार्ग खोज निकला! आगे चलकर हॉलैंड, इंग्लैंड, फ्रांस भी इसमें सम्मिलित हो गए!

मुग़ल काल में मुद्रा ढालने सम्बंधित कारखाने भी विकसित अवस्था में थे! मुग़ल काल त्रिपदात्मक मुद्रा-प्रणाली का विकास हुआ अर्थात मुगलो ने सोने, चाँदी एवं ताम्बे के सिक्के चलाए! सिक्को की ढलाई टकसाल में होती थी और राज्य में मुद्रा निर्माण पर पूरा नियंत्रण था! मुग़ल काल में सर्वाधिक टकसाल औरंगज़ेब के काल में मौजूद थी! इस काल में चाँदी के रूपए और ताम्बे के दाम में १:४० का अनुपात था! अकबर ने शनशब /मुहर नाम से सोने के सिक्के जारी किए तथा इलाही एवं जलाली नामक चाँदी के सिक्के जारी किए तो जहांगीर ने निसार तथा शाहजहाँ ने आना नामक चाँदी के सिक्के जारी किए! इन सिक्को के निर्माण ने व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया! मुग़ल काल में बैंकिंग प्रणाली मौजूद थी, जिसे सर्राफ द्वारा संचारित किया जाता था! मुग़ल काल में उत्पादन सामग्री की विविधता और विकसित व्यापार-वाणिज्य ने नगरों के विकास को प्रोत्साहित किया! नगरों का विकास विभिन्न रूप में सामने आया! ये नगर राजनितिक सैनिक छावनी के रूप में विकसित हुए, जैसे दिल्ली, लाहौर, हैदराबाद आदि तो कुछ नगर व्यापारिक गतिविधियों एवं उत्पादन केंद्र के रूप में विकसित हुए, जैसे पटना, अहमदाबाद, ढाका, आगरा आदि तो कुछ नगर सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुए जैसे मथुरा, बनारस, अजमेर आदि!

मुग़ल काल में शहरी केन्द्रो का विकास तेज़ी से हुआ! इसमें कुछ शहर तो इंग्लैंड के शहरों से भी अधिक बड़े थे, जैसा की यूरोपियन यात्री रालफ फिंच ने कहा था कि आगरा तथा फतेहपुर सिकरी लंदन से भी बड़े है! इन नगरों के तथा अन्य मुगलकालीन भवन - निर्माण कि भव्यता से यह बात निश्चित होती है कि मुगलकालीन भवन - निर्माण उद्योग अपनी उच्चता के शिखर पर था! इसके अतिरिक्त सूबा अवध में गन्ने कि खेती बड़े पैमाने पर होने के कारन चीनी उद्योग का महत्वपुर्ण स्थान था! लखनऊ तथा पिहानी चीनी उत्पादन के दो प्रमुख क्षेत्र थे, जिसमे पिहानी कि चीनी उत्तम किस्म की मानी जाती थी! अंग्रेज़ अधिकारियो द्वारा इस चीनी को अधिक महत्व दिया जाता था, क्योकि यह दक्षिण की चीनी को मोटी किस्म की होती थी! चीनी का प्रयोग सम्पूर्ण प्रदेश में मिठाई व अन्य खाद्य पदार्थ बनाने में उपयोग होता था! चीनी के बारिक टुकड़ो को एकत्रित करके शोरा (सल्फर) भी बनाया जाता था, जिसमे अधिक रूप से निर्यात इंग्लैंड को किया जाता था!

भारत में चमड़े का उद्योग अत्यधिक प्राचीन रहा है! इस उद्योग के कारीगरों की एक अलग जाती होती है, जिसे चर्मकार कहा जाता है! मृत जानवरो के चमड़े से चमार तलवार की म्यान, जूते-चप्पल आदि बनाते थे तथा कमर में बांधने वाली पेटी भी प्रमुख रूप से बनाई जाती थी! सूबा अवध में सामान्यतः प्रत्येक अच्छे किसान के पास चमड़े की एक 'मयूक' उपलब्ध थी, जो कृषि कार्य सिंचाई हेतु प्रयोग की जाती थी! चमड़े का उद्योग अधिकतर लखनऊ में ही होता था! वही मुगल काल में कागज़ उद्योग का भी पर्याप्त विकास हुआ! यद्यपि इस काल में शिक्षा केवल उच्च वर्ग तक सीमित होने के कारण कागज़ की खपत अधिक नहीं थी! कागज का उपयोग विदेशी मिशनरियों, कार्यालयों, स्कूलों, तथा व्यापारियों द्वारा किया जाता था! किन्तु मुगलो द्वारा पत्र-व्यवहार कागज़ से होने के कारण मुगलो में कागज़ की खपत अधिक थी! इसलिए उसे कागज़ी-राज कहा जाता था! टिकाऊ तथा मध्यम प्रकार के कागज़ का प्रयोग बुद्धिजीवियों, समाचार-पत्रों, सौदागरों तथा दलालो द्वारा लेखन के निमित्त तथा जिल्दसाजी आदि में मोटे तथा मजबूत किस्म के कागज़ का प्रयोग होता था! इस प्रकार कागज़ की खपत क्रमशः बढ़ने के कारण कागज़ बनाने के उपयोग का विकास क्रमशःहोता गया! मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के शासन काल में सूबा,अवध में भी कागज़ का उत्पादन होता था! पीटर मुंडी के अनुसार, शाहजादपुर में भी कागज़ अधिक संख्या में बनाया जाता था!

मुग़ल कालीन शासको ने अपनी आवश्यकतानुसार उद्योगों का विकास किया, परन्तु उसे संरक्षित नहीं रख सके, इसके कई कारण थे,

- निरंतर अर्थव्यवस्था का पतन की ओर अग्रसर होना
- शासको का युद्ध में अधिक ध्यान देने की नीति
- शिल्पकारों का पलायन
- युरोपियन का आगमन
- विदेशी सामानों का सस्ता, सुन्दर व टिकाऊ होना
- कमज़ोर और विलासी मुग़ल अधिकारी, इत्यादि!